S.M.A. College Baheri Darbhanga (L.N.M.U)
B.A. (Hons) Part-1 (Economics) P-II
1
5-11-2020

व्याख्यान का संक्षिप्त अंश,

Dr. S. K. Singh
Deptt of Economics

विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए भू-सुधार की आवश्यकता एवं क्षेत्र.

भू-सुधारों (Land Reforms) का उद्देश्य उत्पादन के सामाजिक सम्बंधो को ऐसा स्वरूप प्रदान करना है जिसके फलस्वरूप कृषि उत्पादिता अधिकतम की जा सके। कृषि के क्षेत्र में उत्पादिता मुख्यतः दो प्रकार के तत्वो पर निर्भर करती है तकनीकी और संस्थानात्मक। तकनीकी तत्वो (Technical factors) में बढ़िया बीज, उर्वरक, उन्नत हल, ट्रैक्टर सिंचाई आदि कृषि आदानों (Agricultural Inputs) और विधियो का समावेश है, जिनके उपयोग से कृषि का स्तर उन्नत करने में सहायता मिलती है चाहे भू-सुधार न भी हो। संस्थानात्मक सुधारो (Institutional reforms) के अन्तर्गत भू-स्वामित्व का कृषको के हित में पुनर्वितरण, खेतो के आकार में सुधार भू-धृति की सुरक्षा की व्यवस्था लगान का नियमन (Regulation of rents) आदि समाविष्ट है। दूसरे शब्दों मे, सामंती सम्बंध, खेतों का छोटा आकार, खेतो का उपविभाजन तथा विखण्डन, भू-धारण अधिकारों की सुरक्षा (Security of land tenure rights) का अभाव, ऊँचा लगान आदि ऐसे संस्थानात्मक तत्व है जो कृषको को उत्पादन बढ़ाने मे हतोत्साहित करते है। इन तत्वों के कारण कृषको की बचत करने तथा कृषि मे धन लगाने कि क्षमता कमजोर हो जाती है और वे अपने परिश्रम का फल भी नही भोग पाते। फलतः दो विचारधाराओं का विकास हुआ। एक ओर समाजवादी विचार के प्रवक्ता हैं जिनके अनुसार ग्रामीण निर्धनता का वास्तविक कारण सामंती अथवा अर्द्ध-सामंती सम्बंध रहे है तथा इन संस्थानात्मक बाधाओं के हटा दिए जाने पर जो शक्ति मुक्त होगी उससे कृषि गत उत्पादन स्तर बढ़ जाएगा।

B.M.A. College Baheri Darbhanga (LNMU)
B.A (Hons) Part-II Paper-III (Economics)

1

09/12/2020

Dr. S.K. Singh
Dept. of Economics

बचत एवं विनियोग सिद्धांत,
(SAVING AND INVESTMENT THEORY)

बचत एवं विनियोग सिद्धांत मुख्यतः केन्स (Keynes) के नाम से सम्बन्धित है। मुद्रा के परिमाण सिद्धांत (Quantity Theory of Money) के आलोचकों के अनुसार यह सिद्धांत मूल्य-स्तर में परिवर्तन के क्रम की स्पष्ट रूप से व्याख्या नहीं करता, किन्तु बचत एवं विनियोग सिद्धांत के समर्थकों के अनुसार इस सिद्धांत की सहायता से मूल्य-स्तर तथा इसके परिवर्तनों के कारणों की पूर्ण रूप से व्याख्या की जा सकती है। किसी देश की सकल आय (Total Income) वस्तुओं तथा सेवाओं को खरीदने में व्यय की जाती है। वस्तुएँ दो प्रकार की होती हैं: प्रथम तो क्षणिक या तत्काल उपभोग की वस्तुएँ जिन्हें चालू वस्तुएँ (Current goods) कहते हैं तथा दूसरी वे जो उत्पादन के कार्य में प्रयोग की जाती हैं और जिन्हें टिकाऊ वस्तुएँ (Durable goods) कहा जाता है। इन्हीं दो प्रकार की वस्तुओं को खरीदने में समाज की सम्पूर्ण आय को व्यय किया जाता है जो व्यय चालू वस्तुओं के क्रय में किया जाता है। इसे उपभोग (Consumption) कहते हैं। तथा जो व्यय टिकाऊ वस्तुओं को खरीदने में किया जाता है उसे बचत (Saving) कहा जाता है। जो आय किसी भी प्रकार की वस्तुओं पर व्यय नहीं की जाती है उसे भी संचय अथवा बचत (Saving) कहते हैं। इस प्रकार बचत दो प्रकार की हुई (1) नकद बचत (Saving in cash), तथा (2) वस्तु संचय (Saving in goods) वस्तु संचय (Saving in goods) को ही विनियोग (Investment) भी कहा जा सकता है।

इस प्रकार बचत (Saving), आय (Income) एवं उपभोग (Consumption) के अन्तर को बतलाती है यानि Saving = Income − Consumption। क्राउथर (Crowther) के शब्दों में, "किसी व्यक्ति की बचत उसकी आय का वह भाग है जो उपभोग पदार्थों पर व्यय नहीं की जाती है। इस प्रकार विनियोग (Investment) आय का वह भाग है जो पूँजीगत वस्तुओं पर व्यय किया जाता है। किसी भी अर्थव्यवस्था के विकास के लिए सम्पूर्ण बचत एवं उसका विनियोग अति आवश्यक है।